International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 7, pp: 143-148 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

स्वामी दयानन्द सरस्वती का राष्ट्रवाद

Sumit Kumar
सुमित कुमार
इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा-846008 (बिहार)

Date of Submission: 20-09-2020 Date of Acceptance: 02-10-2020

प्रस्तावना : स्वामी दयानन्द सरस्वती महाभारत के पष्चात वेदों के महानतम ज्ञाता थे।उन्होंने वेदों के आधार पर अपने समस्त विचारों का प्रतिपादन किया। इस कड़ी में यदि उनके राष्ट्रीय भावना को देखें तो वह अत्यन्त स्पष्ट और व्यापक है। उन्होंने भारत के इतिहास, भूगोल, सांस्कृति, आचार-विचार, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष का अत्यन्त ही गहनता एवं गम्भीरतापूर्वक देखा एवं उसका विष्लेषण किया स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत के उत्थान और पतन दोनो का विष्लेषण किया और पाया कि मूल-रूप से षिक्षा की कमी भारत के पतन का कारण बनी। भारत के भौगोलिक स्वरूप को उन्हाने व्यापक अथो में रखा। निष्पक्ष रूप में यदि देखा जाय तो स्वामी दयानन्द सरस्वती का राष्ट्रवाद संकुचित न होकर व्यापक है। जिसमें भारत में निवास करने वाले समस्त जन को इसका अंग मानकर उनके प्रति अपने स्नेह दर्षाया है। वे भारत के पतन से काफी पीड़ित थे। उनका हृदय भारत की दयनीय दषा पर द्रवित हो जाता था। वे भारतीयों के करूण दषा पर फुट-फुट कर रो पड़े थे। इस तरह हम कह सकते है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती का राष्ट्रवाद भारत के स्वतंत्रता की अग्नि में ईंधन का काम कर रहा था। जिसने भारतीयों को पराधिनता की बेड़ियों से मुक्त होने में आत्मबल प्रदान किया।

शब्द कुंजी : स्वामी, दयानन्द सरस्वती, राष्ट्रवाद, आर्यवर्त, विष्लेषण, महाभारत, स्वदेषी, विद्या, 4857, भारतीय, अंग्रेजी, विद्रोह,

आर्यावर्त देश-

स्वामी जी ने भारत को उसके प्राचीन नाम से हीं पुकारा है। वे लिखते हैं आर्यावर्त' भारत का प्राचीन नाम है। आर्य लोगों अर्थात् श्रेष्ठ लोगों के निवास के कारण इसका नाम आर्यावर्त पड़ा। उनका कहना हैं कि "आर्यलोग सब भूगोल में उत्तम इस भूमि के खण्ड को जानकर यहीं आकर बसे। इसी से इस देश का नाम आर्यावर्त्त हुआ ।' उन्होंने सत्यार्थ प्रकाष में लिखा हैं कि तिब्बत से आर्य लोग भारत आए आर आर्यो के नाम पर हीं इस देष का नाम आर्यावर्त पड़ज़ं

आर्यावर्त की सीमा-

मनु के आधार पर स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यावर्त्त की सीमा बताई है। "उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व और पष्चिम में समुद्र तथा सरस्वती। पष्चिम में अटक नदी, पूर्व में द्वषद्वती जो नेपाल के पूर्व भाग पहाड़ से निकल के बंगाल क आसाम के पूर्व और ब्रहमा के पष्विम ओर होकर दक्षिण के समुद्र की खाड़ी में अटक मिली है। हिमालय की मध्यरेखा से दक्षिण और पहाड़ के भीतर और रामेश्वर पर्यन्त विन्ध्याचल के भीतर जितने देष हैं उन सब को आर्यजनों के निवास करने से आर्यावर्त कहा है"

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत की प्राचोन प्राकृतिक सीमा का उल्लेख आर्यावर्त की सीमा में किया है। यहाँ विन्ध्याचल के भारत के मध्य में ही न मानकर सम्पूर्ण दक्षिण की पर्वत माला को इसमें रखा हैं।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 7, pp: 143-148 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

आर्यावर्त देश की विशेषता-

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत को संसार के सब देषों में उत्तम बताया है। व लिखते हैं कि "यह आर्यावर्त देष ऐसा देष हैं जिसके सदृष भूगोल में दूसरा कोई देष नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। फिर आगे इसकी विषेषता बताते हैं कि "जितने भूगोल में देष है वे सब इसी दष की प्रषंसा करते और आषा करते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परंतु आर्यावर्तदेष देष की सच्चा पारसमणि ह कि जिस को लोहरूप दरिद्र विदेषी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनादय हो जाते है"

भारत के राजनैतिक गौरव का वर्णन-

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतीयों को भारत के राजनैतिक उत्थान के इतिहास से परिचित कराया। वे लिखते है कि "सृष्टि से लके पाँच सहस्र वर्षो पूर्व समय पर्यन्त आर्यो का सार्वभौम-चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एक मात्र राज्य था। महाराजा युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध पर्यन्त यहाँ के राज्याधीन सब राज्य थे। यहाँ स्वामी जी ने प्राचीन भारतीय इतिहास के उस युग का वणन किया है जब सम्पूर्ण विष्व भारत के चक्रवर्ती राज्य के अधीन था। उनका मानना हैं कि महाभारत तक यह स्थिति थी। उसके बाद भारत की दषा कमजोर होने से ये राज्य अलग हो गए। इसका प्रमाण देते हुए उन्होंने मैत्रेय उपनिषद के प्रमाण से यह बताया है कि "भारत में अनेक चक्रवर्ती राजा हुए |" वे लिखते हैं कि "प्रमाणों से सिद्ध है कि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती सार्वमौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। अब उनके संतानो का अभाग्योदय होने से राजमश्रष्ट होकर विदेषियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं। जैसे यहाँ सुद्युम्न, भूरिधुम्न, इन्द्रद्यम्न, और भारत सार्वभौम सब भूमि के प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखे है वैसे स्वायम्भवादि चक्रवर्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति महाभारतादि ग्रन्थों में लिखे है"।

महाभारत के समय युद्धिष्ठिर के चक्रवर्ती राज्य का उल्लेख करने के साथ ही उनके अधीन राजाओं का नाम महाभारत से उन्होंने दिया है। उन्होंने लिखा है कि "सुनो! चीन का भगदत्त, अमेरिका का बब्रुवाहन, यूरोपदेष का विडालाक्ष अर्थात मार्जार के सदृष आँखाले, यवन जिस के यूनाना कह आये और ईरान का शल्य आदि सब राजा राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्धपर्यन्त यहाँ के राज्याधीन सब राज्य थे"

भारत के वैज्ञानिक इतिहास का वर्णन

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदादि शास्त्रों के आधार पर यहाँ यान और दिव्याश्षास्त्रों का वर्णन किया है वहीं इसका प्राचीन भारत में अस्तित्व भी बताया है। उन्होंने तोप, बन्दूक और आग्नेयास्त्र आदि का उल्लेख किया है।

राजा भोज कालीन यान का उल्लेख करते हुए स्वामी जी लिखते है कि "राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे-ऐसे षिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार एक यान यन्त्र कलायुक्त बनाया था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि बिना मनुष्य के चलाये कलायन्त्रा के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था। जो ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभियान में न चढ़ जाते " स्वामी जी ने यहाँ यह बताया हैं कि भारत वर्ष ज्ञान-विज्ञान में काफी पूर्व से ही उन्नत था। यदि वे आविष्कार हम न खोते तो यूरोपीय लोग इतने अभिमान से न रहते। फिर वे लिखते है कि "यह निष्वय है कि जितनी विद्या और मत भूगोल में फैले हैं वे सब आर्यावर्त देष ही से प्रचारित हुए है"

स्वामी जी ने भारत के पतन का कारण वैभव बढ़ने से उत्पन्न दोषों को पतन का कारण माना है। साथ ही अन्याय, अत्याचार अपिक्षा मांसाहार, शराब का सेवन, सामाजिक बुराईयो जैसे बालविवाह और आपसी फूट को कारण माना है।' वैदिक षिक्षा की कमी को पतन का मुख्य कारण मानते हुए उन्होंने लिखा है कि महाभारत के बाद वेद विद्या का प्रचार खत्म होने से लोगों में ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान, आपस में वैर आदि होने से चक्रवर्ती राज्य नष्ट हो गया। बाहयण लोगों में भी वदोक्त षिक्षा न होने से अन्य वर्ण भी षिक्षा रहित हो गए। इससे विभिन्न प्रकार के पाखण्ड और मत चल

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 7, pp: 143-148 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

पड़े। ब्राह्मण लोगों ने आजीविका के लिए नकली शास्त्र ऋषियों के नाम पर चलाए। इससे सम्पूर्ण भारत का पतन हो गया।*

भारत पर विदेषी शासन के मुख्य कारणों का स्वामी जी लिखते हैं कि "विदेषियों के आर्यावर्त मे राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना वा बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म है। जब आपस में भाई-भाई लड़ते है तभी तीसरा विदेषी आकर पंच बन बैठता है "॥ भारतीयों में फैले आपसी फूट को उन्होंने भारत के परतंत्राता का कारण माना है। उनके विचार आज भी हम जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्रावाद, भाषावाद, आदि के झगड़े से ऊपर उठकर राष्ट्र के प्रति सोचने की प्रेरणा देते ह।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अंग्रेजी राज्य के आने के कारण आपसी आलस्य, कलह आदि को बताया है साथ ही विदेषी दासता में भारतीयों के दुःख का वर्णन भी किया है।" ये विचार अवष्य हो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायकों के लिए प्रेरणा
स्रोत रहे होंगे और आज भो है।

स्वदेशी राज्य का महत्व:-

1857 के विद्रोह के पष्चात महारानी के आदेष पर कम्पनी से शासन रानी के अधीन हो गया। रानी ने भारतीय प्रजा के साथ पुत्रवत बर्ताव का वचन दिया। किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसे सही नहीं माना।

स्वामी जी के समकालीन और बाद के भी बहुत से लेखक, नेता आदि अंग्रेजी राज्य की महिमा गाते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने तो 1857 के विद्रोहियों को मूढ़े कहा। प्रताप नारायण मिश्र ने वैसे लोगों को वैसा अदूरदर्षी कहा जिससे राष्ट्र को कलंक लगा।" महादेव गोविन्द रानाडे और गोपाल राव हरिदेषमुख अग्रेजी राज्य को ईष्वरीय देन मानते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने तो यह भी कहा कि "अंग्रेजी राज्य साज सुख सजे सब भारी "।" अर्थात् अंग्रेजी राज्य में काफी सुख हैं।
किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अंग्रेजी राज्य के विरूद्ध युद्ध करने वाले बघेर लोगों की प्रषंसा की वे लिखते हैं कि "जब संवत् 1914 के वर्ष में तोपों के मारे मंदिर मूर्तियाँ अंग्रेजों ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहाँ गई थी। प्रत्युत बघेर लोगा ने जितनी वीरता की और लड़े शत्रुओं को मारा परंतु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी तोड़ सकी। जो भी कृष्ण के सदृष कोई होता तो इसके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।" स्वामी दयायन्द सरस्वती के ये विचार तात्कालीन राजाओं और क्रान्तिकारियों के लिए प्रेरणा पथ थे। यदि वे नीति और संगठन पूर्वक कार्य करे तो अंग्रेजों को परास्त करना कठिन नही है। जैसे कृष्ण ने नीति से जरासंध आदि का नाष किया था।

साथ ही अंग्रेजी और स्वदेषी राज्य में उन्होंने स्वदेषी राज्य को सर्वोपरि घोषित किया। उन्हाने स्पष्ट घोषणा की "काई कितना ही करे परंतु जो स्वदेशीय राज्य होता है। वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेषियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है "।* उनका मानना था कि अंग्रेज बाते करते हैं निष्पक्षता की किन्तु वे घोर पक्षपाती और स्वार्थी है। साथ
ही दासता में व्यक्ति का सर्वस्व पराजित होने से उसका अस्तित्व नष्ट हो जाता है अतः स्वेदषी राज्य हीं उन्नति का मूल हैं।

राष्ट्रीय उन्नति के उपाय

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत के अवनति पर अत्यन्त कष्ट होता था। वे कहते थे कि भारत एक महान देष था। जिसका गौरव विष्व में फैला था। यहाँ बड़े-बड़े ऋषि-महर्षि, राजा और विद्वान हुए थे। किन्तु आज जितना पतन हुआ हैं उतना कभी न हुआ था। भारतीय इतिहास के अवलोकन से उन्होंने इसके गौरव को जाना था किन्तु अपने सम्मुख दीन-हीन आडम्बरों और कुरीतियों में जकड़े आर्य संतानों को देख कर उन्होंने कहा कि इतना पतन भारत का हुआ है जितना समकालीन किसी राष्ट्र का पतन नहीं हुआ है।

भारत के उन्नति के उपाय एवं पतन का कारण बताते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वतो लिखते है कि "आर्यवर्तवासी मनुष्य जब तक सनातन संस्कृत विद्या

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 7, pp: 143-148 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

न पढ़ेंगा, सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग एक परमेस्वर की उपासना को न करेंगे, परस्पर विद्यागृहण और श्रेष्ठ व्यवहारों को न करेंगे, परस्पर हित और उपकार न करेंगे, पाषाणादिक- मूर्तिपूजन, हठदुराग्रह, आलस्य अत्यन्त विषय सेवा, खुषामदी, धुर्तपुरूषों का संग, मिथ्या विद्या और दृष्ट व्यवहारा को न छोड़ेगे, मिथ्या धन नाष और बाल्यावस्था में विवाह के त्याग, बहमचर्याप्रम से शरीर और विद्याग्रहण और श्रेष्ठ व्यवहारों का न करेंगे, परस्पर हित और उपकार न करेंगे, पाषणादिक-भूतिपूजन हठदुराग्रह, आलस्य अत्यन्त विषय सेवा, खुषामदी, धुर्तपुरूषों का संग, मिथ्या विद्या और दृष्ट व्यवहारों को न छोड़गे, मिथ्यर धन नाष और बाल्यावस्था म विवाह के त्याग, ब्रहमचर्याश्रम से शरीर और विद्याग्रहरण जब तक न करेंगे और शरीर बुद्धि विद्या धर्मादिकों की रक्षा और उन्नति न करेंगे, तब तक इनको सुखलाभ होना बहुत कठिन है, अन्य देषवासियों को भी।* स्वामो जी राष्ट्रीय उन्नति के कुछ उपाय बताते है। वे लिखते है "भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक पिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दृष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है "।" फिर लिखते है कि "जब तक एक मत, एक हानि लाभ, एक सुख दुःख परस्पर न माने तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है। परंतु केवल खाना-पीना ही एक होने से सुधार नहीं हो सकता किन्तु जब तक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते तब तक बढ़ती के बदले हानी होती है "।"

भारतोयों में परस्पर प्रेम के बिना राष्ट्र का कल्याण नहीं हो सकता ऐसा स्वामी जी का मानना था।स्वामी दयानन्द सरस्वती का मानना है कि प्राचीन समय में एक ही वेद मत था। बाद मे जब मानवता रूपि इस धर्म का नाष हुआ और अनेक सम्प्रदाय उत्पन्न हुए तो संसार में दुःख बढ़ा। "क्योंकि उस समय सर्व भूगोल में वेदाक्त एक मत था। उसी में सब की निष्ठा थी और एक दूसरे का सुख-दुःख हानी लाभ आपस में अपने समान समझते थे। तभी भूगोल में सुख था। अब तो बहुत से मतवाले होने से बहुत सा दुःख विरोध बढ़ गया है। इसी का निवारण करना बुद्धिमानों का काम है" ।" आज भी स्वामी जी के विचार प्रासंगिक हैं वे साम्प्रदायिक भिन्नता के कारण लोगों अन्दर उत्पन्न कलह को एक सत्य सिद्धान्त युक्त फिक्षा से दूर करना ही उपाय मानते थे।

स्वामी जी कुछ अन्य उपाय देष व विष्व की उन्नति के बताते हुए कहते है कि "जो बाल्यवस्था में एक सी फिक्षा हो, सत्याभाषाणदि धर्म का ग्रहण और मिथ्याभाषणादि अधर्म का त्याग करें तो एकमत अवष्य हो जायें। और दो मत अर्थात् धर्मात्मा और अधर्मात्मा सदा रहते हैं वे तो रहे है। परंतु धर्मात्मा अधिक होने और अधर्मी न्यून होने से संसार में सुख बढ़ता है। और जब अधर्मी अधिक होते है तब दुःख। जब सब विद्वान् एक सा उपदेष करें तो एकमत होने में कुछ भी विलम्ब न हो "। उपरोक्त कथमनों से स्पष्ट है कि वे मूल्य परक मानवतावादि फिक्षा द्वारा लोगों के भिन्नता का भाव दूर कर एकता लाना हैं राष्ट्रीय एकता का मूल उपाय मानते थे

कला कौशल :-

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने केवल वाणी से ही भारत की उन्नति की बात न कि अपितु भारत क युवाओं को तकनीकी रूप से कुषल बनाने के लिए उन्होंने प्रयत्न भी किया। देष में कला, कौषल के विकास के लिए स्वामी जी जर्मनी के प्रो0 बी.जे. से सम्पर्क किया था। उन्हें लगता था की यदि भारतीय छात्रों कों जर्मनी भेज कर आधुनिक कला कौषल में दक्ष बनाया जाय तो भारत की आर्थिक उन्नति हो सकेगी। किन्तु किन्हीं कारणों से यह कार्य आगे नहीं बढ़ सका।भले ही स्वामी जी की योजना आगे न बढ़ सकी। किन्तु देष के आर्थिक उन्नति के लिए उनका प्रयास उनके आर्थिक राष्ट्रवाद का क्रियात्मक पक्ष है। हण्टर कमीषन देष में भाषा विषयकसर्वे कर रहा था। हिन्दी भाषा को राजभाषा बनाने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सम्पूर्ण भारत के आर्यसमाजों को अपने तरफ से हिन्दी के समर्थन में मेमोरियल भेजने के प्रेरित किया। स्पष्टतः व हिन्दी को भारत के हृदय की भाषा मानकर उसे राजकार्य की भाषा बनवाने के लिए प्रवृत्त हुए।ताकि भविष्य में यह सम्पूर्ण भारत की एकता का साधन बन सके सही अर्थों में राष्ट्रीय एकता के लिए उनका यह प्रयास मील का पत्थर हैं।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 7, pp: 143-148 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

निष्कर्ष :

राष्ट्रवाद सामाजिक संरचना का उच्चत्तम स्तर माना जा सकता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पराधिनता काल में भारतीयों को जगाने के लिए उनके गौरवमय इतिहास युक्त राष्ट्रीयता की धारना राष्ट्र के उन्नति एवं उन्नति के उपायों की चर्चा की है। उन्होंने भारतीयों को याद दिलाया की तुम्हारे राष्ट्र का इतिहास अत्यन्त ही उन्नत और प्रतिष्ठित रहा है। जो अंग्रेजों के इतिहास से भी अति प्राचीन और गौरवमय है। उन्होंने आर्यावर्त की सीमा को बताते हुए भारत के चक्रवर्ती राजाओं का जो यषोगान किया है वह भारतीयों को पराधिनता से मुक्त होकर विष्व में अपने वैभव एवं शक्ति को प्रतिष्ठित करने की प्रेरणा देता है। साथ ही उन्होंने समकालीन भारत की उन समस्याओं को किया है जो भारत को पराधीनता बनाने के कारण है। उसके साथ ही ज्ञान-विज्ञान को बढ़ाने के लिए भी प्रेरणा दी है। उन्होंने देष को उन्नत बनाने एवं पराधिनता से मुक्त होने के उपायों को भी बताया है। ये उपाय वर्त्तमान भारत में अनेक पुरानी समस्यायें आज भी ज्यों की त्यों खड़ी है। स्वामी जी के विचारों को अपनाका हम अपने राष्ट्र को उन्नत बना सकते है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रवाद को वैदिक राष्ट्रवाद या मानवतावादी राष्ट्रवाद कह सकते हैं। जिसमें राष्ट्र के लोगों में राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं उसके उत्थान के लिए कष्टो के सहन को भी वे हँसकर सहना जानते है। राष्ट्र के दयनीय दषा को सुधारने के लिए षिक्षा, एकता, मतभिननता दूर करना एवं एक राष्ट्रीय भाषा की आवश्यकता अनुभव करत है। क्षेत्रियता से ऊपर उठकर वे राष्ट्र को ही सवोपरि मानते है। उन्होंने स्वंय राष्ट्रीय स्तर पर अपनी गुजराती पहचान को आगे न रजकर भारतीयता को ही अपना परिचय माना। वे सही अर्थों में सम्पूर्ण भारत के एकता अखण्डता के लिए प्रयत्नपील रहे। इसके लिए वे जियें ओर इसो के लिए वे मरे भी। वे तत्कालीन भारत के स्वतंत्रता सेनानी क हृदय सम्राट रहे और आज भी राष्ट्र के उत्थान की बात करन वालों के लिए उनके विचार प्रकाश स्तम्भ हैं।

संदर्भ सूची :-

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती 'सत्याथ प्रकाष' आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 202,
पृ. 485
2. उपयक्त, पृ. 185
3. उपर्युक्त, पृ. 225
4. उपर्युक्त, पृ. 225
5. उपर्युक्त, पृ. 245
6. उपर्युक्त, पृ. 227
7. उपर्युक्त, पृ. 225-226
8. उपर्युक्त, पृ. 228
9. उपर्युक्त, पृ. 219
10.उपर्युकत, पृ.18
11.मंजुलता विद्यार्थी, "ऋर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी भाषा और साहित्य की देन" हिण्डौन सिटी, मुनिवर गुरूदत्त संस्थान, राजस्थान, 1999 पृ. 158
12.उपर्युकत पृ. 159
13.स्वामी दयानन्द सरस्वती,पूर्वोक्त पृ. 365.
14. उपर्युक्त पृ.187
15.स्वामी दयानन्द सरस्वती "ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग-(सम्पादक पं. भगवदूत्त एवं यधिनिष्ठर मीमांसक), रामलाल कपूर टूस्ट, बहालगढ़, हरियाण- 1993, पृ. 56.
16.स्वामी दयानन्द सरस्वती, पूर्वोक्त, प0. 187.
17. सत्यार्थ प्रकाष'पृ. 219 उपयुक्त पृ. 219.
18.सत्यार्थ प्रकाश पृ. 223
19.सत्यार्थ प्रकाश पृ. 317

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 2, Issue 7, pp: 143-148 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

आवासीय पता	संस्थान पता
डा. सुमित कुमार **Dr. Sumit Kumar** पिता–श्री कैलाश प्रसाद पता–ग्राम–सरिसब पाही (संजय वस्त्रालय) वार्ड नं.–10, डाकघर– सरिसब पाही थाना–पण्डौल, जिला–मधुबनी पिन कोड–847424 राज्य–बिहार (भारत) मोबाईल नं-**+91-9631385276** इ–मेल :-**sumit10pankaj@gmail.com**	डा. सुमित कुमार **Dr. Sumit Kumar** इतिहास विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा–846008 (बिहार) मोबाईल नं-**+91-9631385276** ई–मेल:-**sumit10pankaj@gmail.com**